देव

(सन् 1673-1767)

महाकवि देव का जन्म इटावा, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनका पूरा नाम देवदत्त द्विवेदी था। औरंगज़ेब के पुत्र आलमशाह के संपर्क में आने के बाद देव ने अनेक आश्रयदाता बदले, किंतु उन्हें सबसे अधिक संतुष्टि भोगीलाल नाम के सहृदय आश्रयदाता के यहाँ प्राप्त हुई, जिसने उनके काव्य से प्रसन्न होकर उन्हें लाखों की संपत्ति दान की। अनेक आश्रयदाता राजाओं, नवाबों, धनिकों से संबद्ध रहने के कारण राजदरबारों का आडंबरपूर्ण और चाटुकारिता-भरा जीवन देव ने बहुत निकट से देखा था। इसीलिए उन्हें ऐसे जीवन से वितृष्णा हो गई थी।

रीतिकालीन कवियों में देव बड़े प्रतिभाशाली कवि थे। दरबारी अभिरुचि से बँधे होने के कारण उनकी कविता में जीवन के विविध दृश्य नहीं मिलते, किंतु उन्होंने प्रेम और सौंदर्य के मार्मिक चित्र प्रस्तुत किए हैं। अनुप्रास और यमक के प्रति देव में प्रबल आकर्षण है। अनुप्रास द्वारा उन्होंने सुंदर ध्वनिचित्र खींचे हैं। ध्वनि-योजना उनके छंदों में पग-पग पर प्राप्त होती है। शृंगार के उदात्त रूप का चित्रण देव ने किया है।

देव कृत कुल ग्रंथों की संख्या 52 से 72 तक मानी जाती है। उनमें ***रसविलास***, ***भावविलास***, ***भवानीविलास***, ***कुशलविलास***, ***अष्टयाम***, ***सुमिल विनोद***, ***सुजानविनोद***, ***काव्यरसायन***, ***प्रेमदीपिका*** आदि प्रमुख हैं।

देव के कवित्त-सवैयों में प्रेम और सौंदर्य के इंद्रधनुषी चित्र मिलते हैं। संकलित सवैयों और कवित्तों में एक ओर जहाँ रूप-सौंदर्य का अलंकारिक चित्रण हुआ है, वहीं रागात्मक भावनाओं की अभिव्यक्ति भी संवेदनशीलता के साथ हुई है। यहाँ उनकी छोटी-छोटी तीन कविताएँ दी गई हैं।

हँसी की चोट विप्रलंभ-शृंगार का अच्छा उदाहरण है। कृष्ण के मुँह फेर लेने से गोपियाँ हँसना ही भूल गई हैं। वे कृष्ण को खोज-खोज कर हार गई हैं। अब तो वे कृष्ण के

मिलने की आशा पर ही जीवित हैं। उनके शरीर के पंच तत्त्वों में से अब केवल आकाश तत्त्व ही शेष रह गया है।

सपना *में गोपी स्वप्न में कृष्ण के साथ झूला झूल रही है। तभी उसकी नींद टूट जाती है, और उसका स्वप्न खंडित हो जाता है। इस में संयोग-वियोग का मार्मिक चित्रण हुआ है।* **दरबार** *में पतनशील और निष्क्रिय सामंती व्यवस्था पर देव ने अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है।*

हँसी की चोट

साँसनि ही सौं समीर गयो अरु, आँसुन ही सब नीर गयो ढरि।
तेज गयो गुन लै अपनो, अरु भूमि गई तन की तनुता करि।।
'देव' जियै मिलिबेही की आस कि, आसहू पास अकास रह्यो भरि,
जा दिन तै मुख फेरि हरै हँसि, हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि।।

सपना

झहरि-झहरि झीनी बूँद हैं परति मानो,
घहरि-घहरि घटा घेरी है गगन में।
आनि कह्यो स्याम मो सौं 'चलौ झूलिबे को आज'
फूली न समानी भई ऐसी हौं मगन मैं।।
चाहत उठ्योई उठि गई सो निगोड़ी नींद,
सोए गए भाग मेरे जानि वा जगन में।
आँख खोलि देखौं तौ न घन हैं, न घनश्याम,
वेई छाई बूँदैं मेरे आँसु ह्वै दृगन में।।

दरबार

साहिब अंध, मुसाहिब मूक, सभा बहिरी, रंग रीझ को माच्यो।
भूल्यो तहाँ भटक्यो घट औघट बूढ़िबे को काहू कर्म न बाच्यो।।
भेष न सूझ्यो, कह्यो समझ्यो न, बतायो सुन्यो न, कहा रुचि राच्यो।
'देव' तहाँ निबरे नट की बिगरी मति को सगरी निसि नाच्यो।।

प्रश्न-अभ्यास

1. 'हँसी की चोट' सवैये में चित्रित विरहिणी की कृशता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. 'सपना' कवित्त में किस प्रसंग का वर्णन हुआ है?
3. नायिका कब फूली नहीं समा रही थी और आँख खुलने पर क्या हुआ?
4. 'दरबार' सवैया में किस प्रकार के दरबारी वातावरण की ओर संकेत है?
5. यहाँ साहिब को अंधा क्यों कहा गया है?
6. 'नट की बिगरी मति' से कवि का क्या आशय है?
7. कृष्ण के हँसते हुए मुँह फेरकर चले जाने से गोपिका ने क्या कुछ खो दिया और क्या उसके पास शेष रह गया?
8. 'सपना' कवित्त का भाव-सौंदर्य और शिल्प-सौंदर्य लिखिए।
9. 'सोए गए भाग मेरे जानि वा जगन में' – की विवेचना कीजिए?
10. 'वेई छाई बूँदें मेरे आँसु ह्वै दृगन में' – वेई छाई बूँदें से कवि का क्या अभिप्राय है?
11. देव ने दरबारी चाटुकारिता और दंभपूर्ण वातावरण पर किस प्रकार व्यंग्य किया है?
12. 'सगरी निसि नाच्यो' से कवि का क्या आशय है?
13. निम्नलिखित पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–
    (क) साँसनि ..... करि।।
    (ख) झहरि .....गगन में।
    (ग) साहिब अंध .....बाच्यो।।

योग्यता-विस्तार

1. देव की कविता में से अलंकार छाँटिए और उनकी सोदाहरण विशेषताएँ बताइए।
2. 'दरबार' सवैया को भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'अँधेर नगरी' के समक्ष रखकर विवेचना कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

तनुता – कृशता, दुबलापन
हेरी – देखकर
हरि – हरने वाला, कृष्ण
झहरि – बरसाती बूँदों की झड़ी लगना
मुसाहिब – राजा के दरबारी
औघट – कठिन, दुर्गम मार्ग
निबरे नट – अपनी कला या प्रतिभा से भटका हुआ कलाकार
निगोड़ी – निर्दयी
मूक – चुप
सगरी – संपूर्ण